Toppersnotes®
Unleash the topper in you

MP - PSC

राज्य सिविल सेवा

मध्यप्रदेश लोक सेवा आयोग

भाग – 1

मध्य प्रदेश का इतिहास, संस्कृति, साहित्य और भूगोल, जल प्रबंधन एवं भूविज्ञान

SIERRA INNOVATIONS

मध्य प्रदेश का इतिहास, संस्कृति, साहित्य और भूगोल, जल प्रबंधन एवं भूविज्ञान

<table>
<tr><th>क्रमांक</th><th>अध्याय का नाम</th><th>पृष्ठ संख्या</th></tr>
<tr><td colspan="3">यूनिट -1 (प्रीलिम्स) मध्य प्रदेश का इतिहास, संस्कृति और साहित्य</td></tr>
<tr><td colspan="3">पेपर A यूनिट 5 (मेन्स) मध्य प्रदेश के राजवंश</td></tr>
<tr><td>1.</td><td>मध्य प्रदेश का प्राचीन इतिहास
• मध्य प्रदेश में पाषाण युग (40 लाख ईसा पूर्व से 4000 ईसा पूर्व)
• मध्य प्रदेश में कांस्य युग
• ताम्रपाषाण युग
• वैदिक युग
• महाजनपद युग
• मौर्य राजवंश
• मौर्य के बाद
• गुप्त काल
○ गुप्त काल के अभिलेख
○ गुप्त काल के मंदिर
• अन्य राजवंश</td><td>1</td></tr>
<tr><td>2.</td><td>मध्य प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास
• मालवाड़ का परमार राजवंश
• कच्छपगत राजवंश
• चंदेल राजवंश</td><td>11</td></tr>
<tr><td>3.</td><td>मध्य प्रदेश 13-15वीं शताब्दी के दौरान
• कुतुब-उद-दीन ऐबक (1206-1210 ई.)
• इल्तुतमिश
• मध्य प्रदेश में तुगलक
• मालवा सल्तनत (1401-1561)
○ खिलजी वंश (1436-1531)
○ गुजरात के तहत मालवा
○ मालवा पर मुगल आक्रमण (1535)
• फारूकी राजवंश (1398-1601)
○ फारूकी राजवंश (1398-1401) मुगलों के अधीन
• गोंड साम्राज्य
• बघेलखंड राजवंश
○ बघेल सत्ता का विस्तार
○ आर्किटेक्चर
○ पन्ना राज्य
○ मध्य प्रदेश में मराठों का आगमन
○ भोपाल का युद्ध और दोराहा सराय की संधि</td><td>15</td></tr>
</table>

<table>
<tr><th colspan="3">पेपर A यूनिट 4 (मेन्स) मध्य प्रदेश में स्वतंत्रता आंदोलन</th></tr>
<tr><td>4.</td><td>1857 का विद्रोह
• मध्य प्रदेश में विद्रोह
• भोपाल राज्य (1707-1947)
○ गोंड राजाओं के अधीन भोपाल
○ भोपाल की बेगम
• होल्कर राज्य
• देवास राज्य (1735-1947)
○ देवास (वरिष्ठ शाखा) (बाबा साहिब)
○ देवास राज्य (जूनियर शाखा)
• धार राज्य
• ग्वालियर राज्य</td><td>34</td></tr>
<tr><td>5.</td><td>स्वतंत्रता आंदोलन में मध्य प्रदेश का योगदान
• होम रूल लीग
• असहयोग आंदोलन
○ जबलपुर झंडा सत्याग्रह
• सविनय अवज्ञा आंदोलन
○ जंगल सत्याग्रह
○ चरण पादुका सत्याग्रह
○ तुरिया सत्याग्रह 1931
○ व्यक्तिगत सत्याग्रह
• भारत छोड़ो आंदोलन</td><td>49</td></tr>
<tr><th colspan="3">पेपर A यूनिट 4 (मेन्स) मध्य प्रदेश की सांस्कृतिक विरासत</th></tr>
<tr><td>6.</td><td>मध्य प्रदेश के सांस्कृतिक पहलू
• लोक नृत्य
○ निमाड़ क्षेत्र का लोक नृत्य
○ मालवा क्षेत्र का लोक नृत्य
○ बुंदेलखंड क्षेत्र का लोक नृत्य
○ बघेलखंड का लोक नृत्य
• मध्यप्रदेश के नाटक
○ निमाड़ का लोक नाटक
○ बघेलखंड का लोक नाटक
○ मध्य प्रदेश के अन्य लोक नाटक
• मध्यप्रदेश के लोक गीत
○ निमाड़ क्षेत्र
○ मालवा क्षेत्र
○ बुंदेलखंड लोक गीत
○ बघेलखंड लोक गीत
○ मध्य प्रदेश के अन्य लोक गीत
• मध्यप्रदेश के व्यक्तित्व
○ प्रसिद्ध संगीतकार
○ मध्यप्रदेश के साहित्यकार
○ मध्यप्रदेश के लोक लेखक</td><td>54</td></tr>
</table>

	○ मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध चित्रकार ○ मध्य प्रदेश के प्रसिद्ध कलाकार/नाटककार ○ बुंदेलखंड के मध्यकालीन कवि ○ महत्वपूर्ण जनजातीय व्यक्तित्व • मध्यप्रदेश की लोक चित्रकारी ○ निमाड़ क्षेत्र के लोक चित्र ○ मालवा क्षेत्र के लोक चित्र ○ बघेलखंड क्षेत्र की लोक पेंटिंग ○ बुंदेलखंड क्षेत्र की लोक पेंटिंग • मध्यप्रदेश के मेले और त्यौहार ○ मध्य प्रदेश के महत्वपूर्ण मेले • मध्यप्रदेश की वास्तुकला ○ मध्य प्रदेश की रूपांकर कला ○ धातु हस्तशिल्प • मध्य प्रदेश की बोलियाँ	
7.	**मध्य प्रदेश में सांस्कृतिक संस्थान, अकादमियां और संग्रहालय** • सांस्कृतिक संस्थान, अकादमियां • पुरातत्व, अभिलेखागार और संग्रहालय मध्य प्रदेश • संग्रहालय • मध्यप्रदेश के पुरस्कार और सम्मान	**90**
8.	**मध्य प्रदेश के पर्यटन स्थल** • धार्मिक महत्व के स्थल • मध्य प्रदेश के अन्य महत्वपूर्ण स्मारक, गुफाएं और शिलालेख • मध्य प्रदेश के किले और महल • विश्व धरोहर स्थल • मध्य प्रदेश के छत्र और मकबरे	**101**
	यूनिट - 3 (प्रीलिम्स) मध्य प्रदेश का भूगोल	
	पेपर B यूनिट 3 (मेन्स) मध्य प्रदेश का भूगोल	
9.	**मध्य प्रदेश का परिचय** • मध्य प्रदेश की स्थलाकृति • मध्य प्रदेश की भौगोलिक स्थिति • प्रमुख जिले • भौगोलिक तथ्य • उल्लेखनीय तथ्य	**132**
10.	**मध्य प्रदेश के भौतिक विभाग** • विभाजन • भौतिक विभाग और उनकी मुख्य विशेषताएं • तथ्यात्मक निष्कर्ष	**138**

11.	**मध्य प्रदेश में जलवायु, ऋतुएँ और वर्षा** • जलवायु • मध्य प्रदेश के जलवायु क्षेत्र • मौसम • मध्य प्रदेश में वर्षा वितरण • तथ्यात्मक निष्कर्ष	**142**
12.	**मध्य प्रदेश की मिट्टी** • मिट्टी • मध्य प्रदेश की प्रमुख मिट्टी • मृदा अपरदन ○ मृदा अपरदन के प्रकार ○ मध्य प्रदेश में मृदा अपरदन के प्रमुख क्षेत्र • मृदा अपरदन की रोकथाम • मृदा संरक्षण के तरीके	**146**
13.	**नदियाँ और मध्य प्रदेश की जल निकास प्रणाली** • मध्य प्रदेश में ड्रेनेज सिस्टम • मध्य प्रदेशकी नदियां ○ नर्मदा नदी ○ चंबल नदी ○ बेतवा नदी ○ ताप्ती नदी ○ सोन नदी ○ तवा नदी • अन्य नदियाँ • मध्य प्रदेश के झरने ○ तथ्यात्मक निष्कर्ष • मध्य प्रदेश की प्रमुख सिंचाई और नदी घाटी परियोजनाएं ○ मध्य प्रदेश की मुख्य नदियां और बांध ○ प्रमुख सिंचाई और नदी घाटी परियोजनाएं ○ मध्य प्रदेश की संयुक्त परियोजनाएं ○ मध्य प्रदेश की मुख्य नहरें ○ नदी को जोड़ने वाली परियोजनाएं ○ तथ्यात्मक निष्कर्ष	**155**
14.	**मध्य प्रदेश में वन** • वन क्षेत्र • वनों का वर्गीकरण • वन आवरण पर डेटा	**168**
15.	**मध्य प्रदेश की जैव विविधता** • बायोस्फीयर रिजर्व ○ मध्यप्रदेश में बायोस्फीयर रिजर्व • राष्ट्रीय उद्यान ○ मध्यप्रदेश में राष्ट्रीय उद्यान • वन्यजीव अभयारण्य ○ मध्यप्रदेश के वन्यजीव अभ्यारण्य	**175**

	• वेटलैंड्स • तथ्यात्मक निष्कर्ष	
16.	**मध्य प्रदेश के प्राकृतिक खनिज संसाधन** • राज्य की अर्थव्यवस्था में योगदान • राज्य के प्रमुख खनिज • राज्य से खनिजों का निर्यात • राज्य खनिज नीति 2010 • प्रमुख खदानें / क्षेत्र	**182**
17.	**मध्य प्रदेश में परिवहन** • रोडवेज • रेल परिवहन • वायु परिवहन	**193**
18.	**जल प्रबंधन** • भारत में जल संसाधन • जल प्रबंधन • जल संरक्षण	**201**
19.	**भूविज्ञान** • भूविज्ञान का दायरा • पृथ्वी की आंतरिक संरचना • स्थलमंडल और जलमंडल • पृथ्वी की उत्पत्ति और आयु • भूवैज्ञानिक समय पैमाना • चट्टानें • खनिज और अयस्क • जीवाश्म • अपक्षय और अपरदन • मिट्टी का निर्माण • भूजल • प्राकृतिक कोयला • प्राकृतिक तेल और गैस	**212**

प्रिय विद्यार्थी, टॉपर्सनोट्स चुनने के लिए धन्यवाद।

नोट्स में दिए गए QR कोड्स को स्कैन करने लिए टॉपर्स नोट्स ऐप डाउनलोड करे ।

ऐप डाउनलोड करने के लिए दिशा निर्देश देखे :-

ऐप इनस्टॉल करने के लिए आप अपने मोबाइल फ़ोन के कैमरा से या गूगल लेंस से QR स्कैन करें ।

टॉपर्सनोट्स एग्जाम प्रिपरेशन ऐप

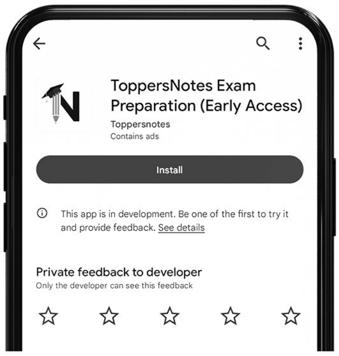

टॉपर्सनोट्स ऐप डाउनलोड करें गूगल प्ले स्टोर से ।

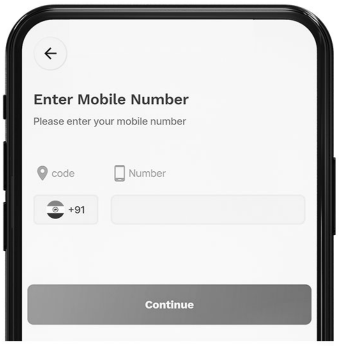

लॉग इन करने के लिए अपना **मोबाइल नंबर** दर्ज करें ।

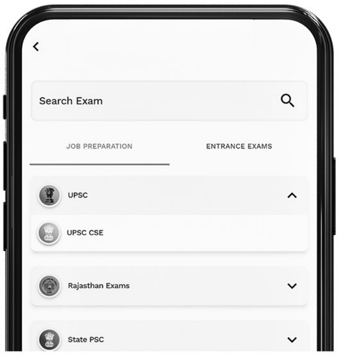

अपनी **परीक्षा श्रेणी** चुनें ।

सर्च बटन पर क्लिक करें ।

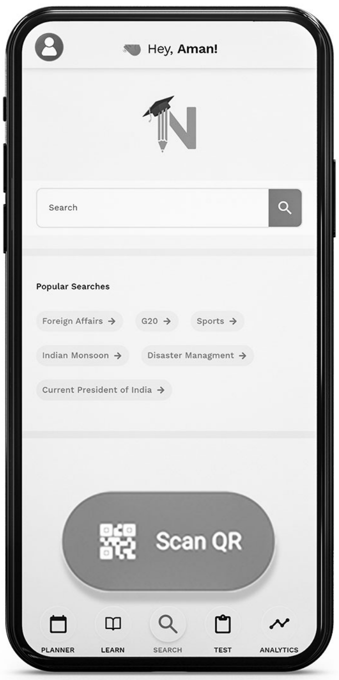

SCAN QR पर क्लिक करें ।

किताब के **QR कोड को स्कैन** करें ।

- सोल्युशन वीडियो
- डाउट वीडियो
- कॉन्सेप्ट वीडियो

- अतिरिक्त पाठ्य-सामग्री

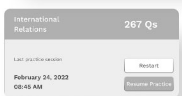

- विषयवार अभ्यास
- कमजोर टॉपिक विश्लेषण

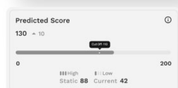

- रैंक प्रेडिक्टर
- टेस्ट प्रैक्टिस

किसी भी तकनीकी सहायता के लिए **hello@toppersnotes.com** पर मेल करें या **766 56 41 122** पर whatsapp करें ।

1 CHAPTER

मध्य प्रदेश का प्राचीन इतिहास

- **डिंडोरी के घुघुआ राष्ट्रीय उद्यान** में मिले **6.5 करोड़** वर्ष **पुराने जीवाश्म** ने साबित कर दिया कि मध्य प्रदेश उतना ही प्राचीन है जितनी की दुनिया ।
- **धार के बाग** इलाके में 100 से ज्यादा **डायनासोर के अण्डों के जीवाश्म** मिले है।
    - वैज्ञानिकों ने इन जीवाश्मों के लगभग 7 करोड़ से 6.5 करोड़ वर्ष पुराने होने का अनुमान लगाया है। अंडे के अलावा, क्षेत्र में **डायनासोर के घोंसलों के जीवाश्म** भी पाए गए हैं।
- वर्ष 2003 में एक अमेरिकी वैज्ञानिक ने एक विशाल डायनासोर के जीवाश्मों की पहचान की थी, जिसे **"राजासौरस नर्मडेन्सिस"** नाम दिया गया था।
- सन् 1930 में **प्रोफेसर लाडकर** ने साबित किया कि **मध्यप्रदेश जुरासिक पार्क की भूमि** है, 1877 ई. में उन्हें जबलपुर के पास **टाइटेनोसॉर डायनासोर का जीवाश्म** मिला।
- ईस्ट इंडिया कंपनी के अधिकारी **विलियम स्लीमैन** को **जबलपुर छावनी क्षेत्र में हजारों हड्डियाँ** मिली।
- सन् 1933 में, **मैटली ने जबलपुर के पास मानव आकार के डायनासोर** प्राप्त किये और इनका नाम जबलपुरिया रखा।
- भूवैज्ञानिक दृष्टि से, **मध्यप्रदेश गोंडवाना भूमि का एक भाग** है।

मध्यप्रदेश में पाषाण युग (40 लाख ईसा पूर्व से 4000 ईसा पूर्व)

- **नरसिंहपुर के पास भूतरा गाँव** में वैज्ञानिको को **पुरापाषाण युग का हथियार** मिला जो मध्यप्रदेश में सबसे पुराना माना जाता है।
- **बेतवा और नर्मदा की घाटी** से मिली **क्वार्टजाइट से बनी हाथ की कुल्हाड़ी**।
- **नर्मदा घाटी सर्वेक्षण में नरसिंहपुर के होशंगाबाद में प्राचीन जीवाश्म** मिले हैं।
- **हथनोरा में** मानव **नर्मदे नूर्नमदेनसिस की खोपड़ी** मिली है।
- **वाकणकर** को **चंबल घाटी के मंदसौर से उपकरण** मिले हैं।

आदमगढ़ (होशंगाबाद)

- नर्मदा नदी के तट पर **मेसोलिथिक स्थल**।
- गुहा चित्र के अवशेष मिले है।

भीमबेटका (रायसेन)

- यह एक **पुरापाषाण और मध्यपाषाण स्थल** है।
- 500 गुफाएँ पाई जाती हैं।

सिंगरौली

- कई गुफाएँ मिलीं उदाहरण के लिए **मांडा गुफाएँ और बाघ गुफाएँ** (धार)
- इन सभी गुफाओं के **चित्रों में लाल, सफेद, काले, पीले प्राकृतिक रंगों का प्रयोग** किया गया है।

कुंजन

- मध्य प्रदेश के **सीधी जिले में स्थित** कुंजन एक **नवपाषाण स्थल** है।
- भारत में नवपाषाण काल 2,600 से 800 ईसा पूर्व के बीच का काल है।
- इसे तीन चरणों में वर्गीकृत किया गया है -
    - **चरण- I** - कोई **धातु उपकरण नहीं** मिला।
    - **चरण- II -** सीमित मात्र में **ताँबे और कांसे के औजार** मिले है।
    - **चरण- III -** इसकी विशेषता **लोहे का उपयोग** है।

Toppersnotes Unleash the topper in you

मध्य प्रदेश में कांस्य युग

- **एरन (सागर) :** कांस्य युग के औजार मिले थे- 2000 ईसा पूर्व से 700 ईसा पूर्व तक।
- **खदिनेमा (होशंगाबाद):** 3500 साल पुराना कांस्य युग
- **अकुरा; नागदा (उज्जैन):** महत्त्वपूर्ण कांस्य युग स्थल
- **महेश्वर- नवदाटोली (1660 ईसा पूर्व से 1440 ईसा पूर्व):** बुद्ध के ग्रंथ और प्रसिद्ध कांस्य युग की सभ्यता में इन दो शहरों का उल्लेख है।
- **टोंथर (रीवा) और भरहुत (सतना):** तीसरी और चौथी शताब्दी की शहरी सभ्यता मिली।

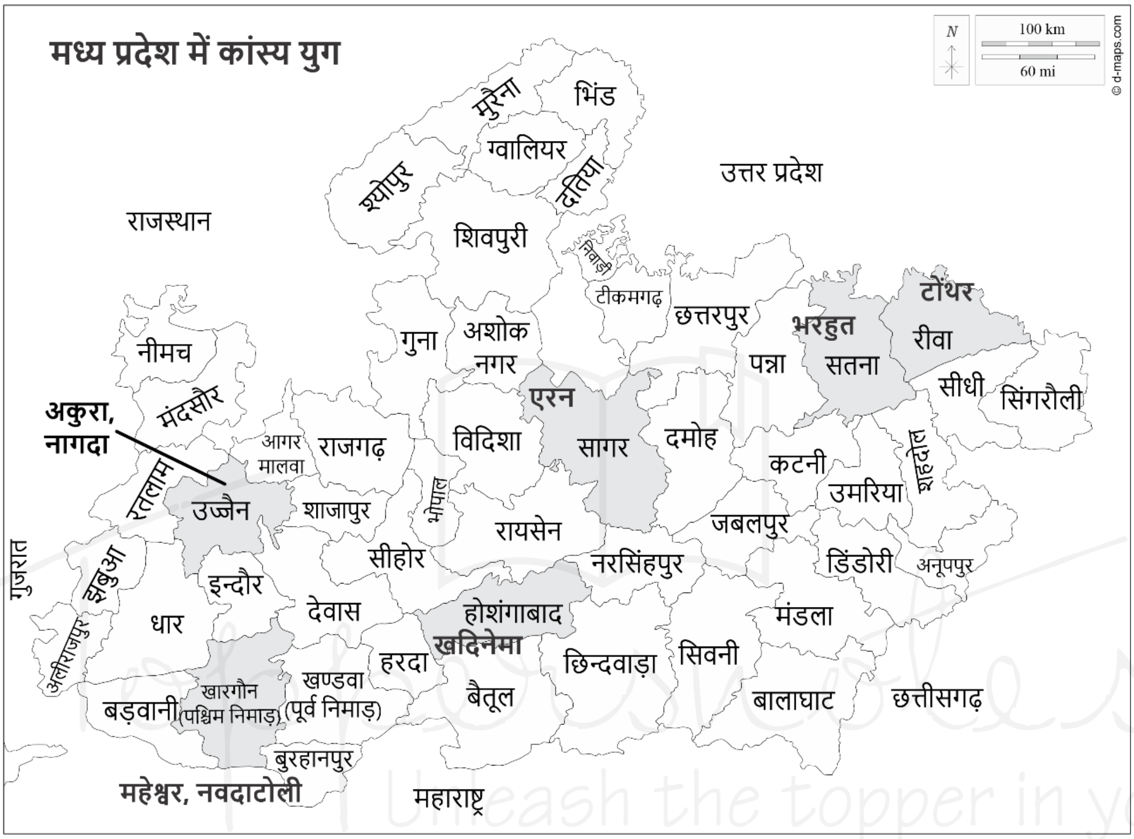

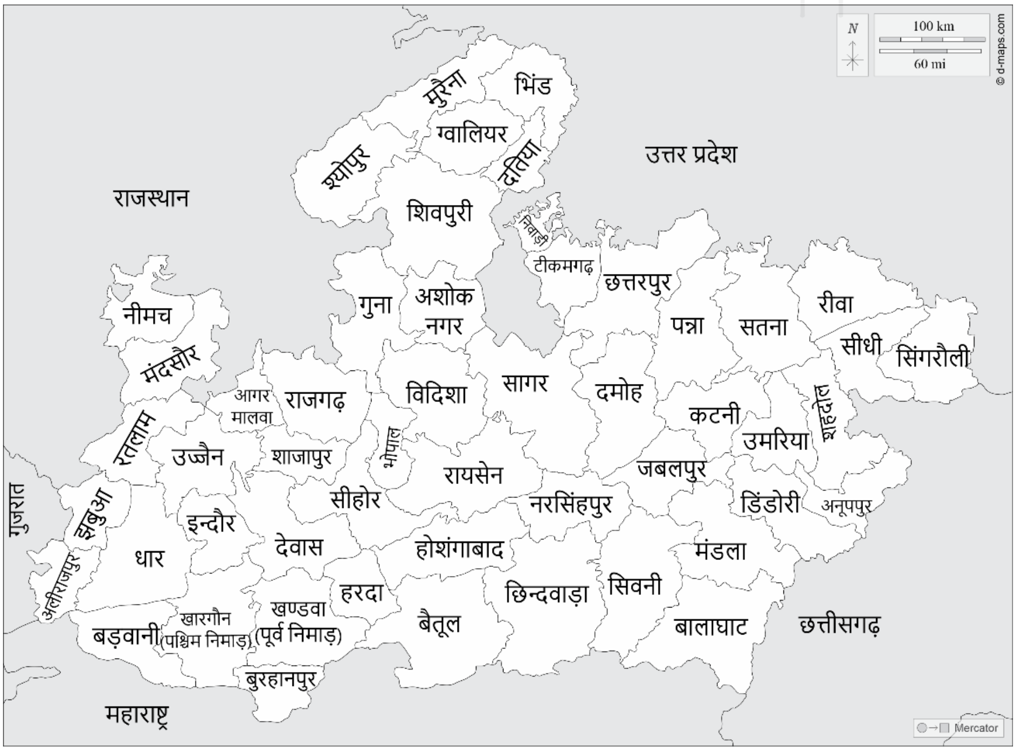

ताम्रपाषाण युग

- **कायथा (उज्जैन):** 1800-1300 ईसा पूर्व की अवधि की **ताँबे की कुल्हाड़ी; ज्योतिषी वराहमिहिर का जन्मस्थान हैं** ।
- **एरन (सागर):** प्राचीन नाम अरिकिनी, **सती का सबसे पुराना शिलालेख** मिला ,**ब्लैक-रेडवेयर, पेंटेडवेयर** मिला ।
- **नवदाटोली (महेश्वर) :** गोल आकार की मिट्टी की कुटिया, आयताकार चूल्हा, गेहूँ, चने की खेती ।
- **अवारा (मंदसौर): नवदाटोली** के समान, चित्रित **लाल-काले और भूरे-सफेद** रंग के बर्तन मिले ।
- **आजाद नगर-** मुसाखेड़ी (इंदौर): **ताम्रपाषाण स्थल** ।
- **डांगवाला -** यह उज्जैन से **32 किलोमीटर दूर बस्ती** में स्थित है, यह पिछली शताब्दी की खुदाई से अस्तित्व में आया था।
- **नागदा -** यह उज्जैन जिले में चंबल नदी के तट पर है। इस ताम्रपाषाण बस्ती से मिट्टी के बर्तन और छोटे पत्थर के हथियार भी मिले हैं।

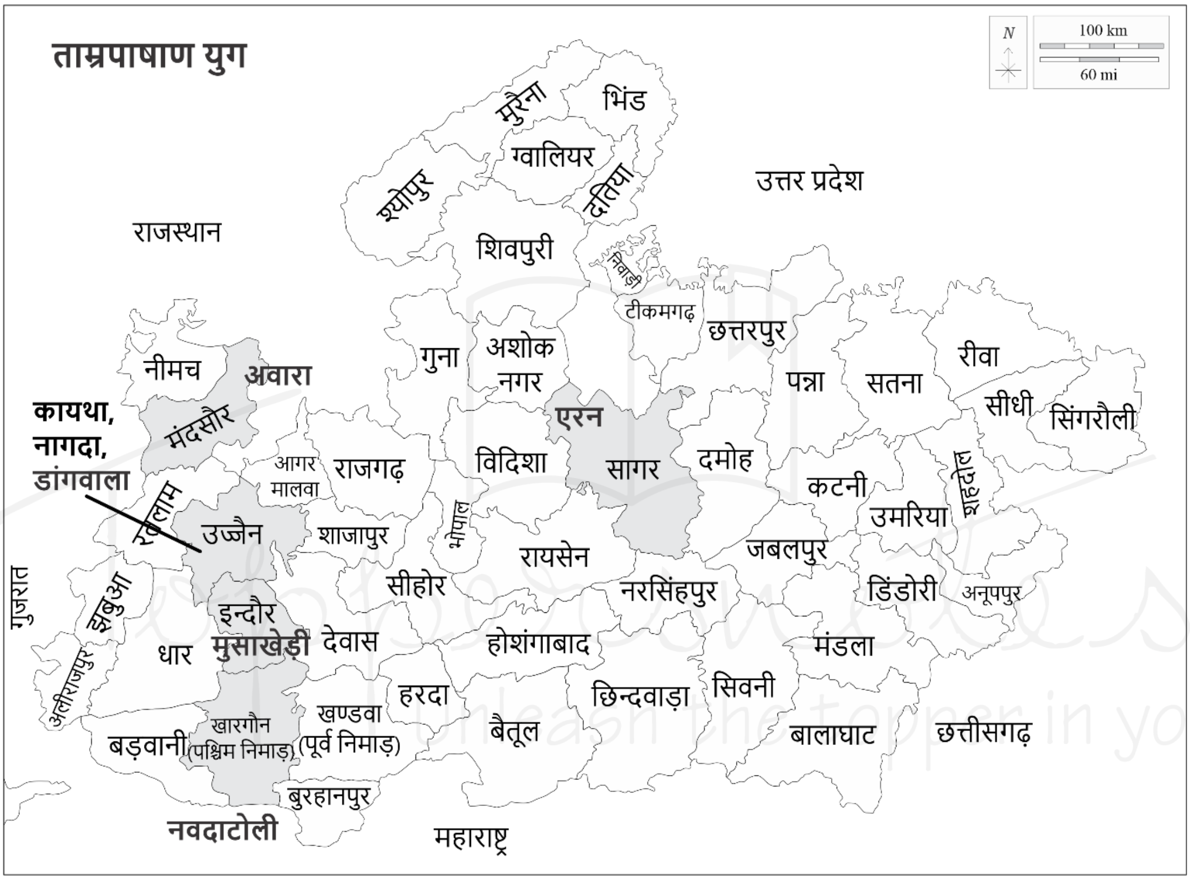

वैदिक युग

- वास्तव में, **आर्य संस्कृति** 1500-1000 ईसा पूर्व **ऋग्वैदिक काल** में उत्तर तक ही सीमित थी और बाद के **वैदिक काल** (1000-600 ई.) में,इसने विन्ध्याचल को पार कर मध्यप्रदेश में प्रवेश किया।
- मनु के 10 पुत्रों में से एक **करुष** ने **बघेलखंड में करुष वंश** की स्थापना की।
- **चंद्रवंश** - मनु की पुत्री इला का विवाह सोम से हुआ और उन्होंने इस वंश की स्थापना की। **सोम का शासन बुंदेलखंड** में था।

इक्ष्वाकु वंश

- मनु के पुत्र **इक्ष्वाकु** के नाम से इस वंश की स्थापना हुई, जिसका शासकीय क्षेत्र **दंडकारण्य था।**
- इस वंश के प्रतापी **राजा मान्धाता** ने अपने पुत्र **पुरुकुत्स** को मध्य भारत के नागा राजाओं (गंधर्वों के विरुद्ध) की सहायता के लिए भेजा।
- उसी वंश के **मुचकुंड** ने अपने पूर्वज राजा मान्धाता के नाम पर **ऋक्ष और** परिपात्र **पर्वत श्रृंखलाओं** के बीच नर्मदा के तट पर **मान्धाता** (ओंकारेश्वर - मान्धाता) **शहर** की स्थापना की।

- कुछ इतिहासकारों ने उल्लेख किया है कि लंका जबलपुर से 15 किलोमीटर दूर स्थित थी।
- विदिशा पर शत्रुघ्न के पुत्र **शत्रुघति का शासन** था।
  - कालिदास के रघुवंश के अनुसार, शत्रुघन ने **यादवों** को हराया और अपने पुत्र शत्रुघति को **विदिशा के राजा** के रूप में स्थापित किया।
- महाभारत युद्ध के दौरान, उज्जैन के राजकुमार **बिंद और अनुविंद** तथा **राजा नील** (माहिष्मती) कौरवों की ओर से लड़े थे।
- जबलपुर के पास **तेवर को महाभारत में त्रिपुरी के रूप में वर्णित** किया गया है।

महाजनपद युग

अवंती (उज्जैन)

- **दीपवंश** के अनुसार, राजा अच्युतगामी ने **उज्जैन शहर** की स्थापना की थी।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने सातवीं शताब्दी में अपने यात्रा वृत्तांत में **उज्जैयिनी** (उ-शे-येन-ना) का उल्लेख किया है।
- **चण्डप्रद्योत महासेन** (बुद्ध के समकालीन) के शासन काल में उज्जैन राजधानी अवंती और माहिष्मती के साथ महाजनपदों का हिस्सा था।
- बिम्बसार ने चण्ड प्रद्योत को ठीक करने के लिए अपने वैद्य जीवक को भेजा।
- शिशुनाग (मगध) ने नंदीवर्मन (उज्जैन के राजा) को हराया और इसे मगध साम्राज्य में मिला दिया।

चेदि महाजनपद

- **राजधानी**: **सुक्तिमती** या **सोथिवती**, यह बुंदेलखंड का एक हिस्सा थी और **खारवेल के तहत कलिंग की एक शाखा** थी। बाद में मगध ने चेदि पर कब्जा कर लिया।
- शिशुपाल **चेदि महाजनपद** का राजा था जिसका वध श्री कृष्ण ने किया था। उसके बाद उसका पुत्र **धृष्टकेतु** चेदि देश का राजा बना।
- **महाभारत युद्ध** में श्री धृष्टकेतु ने पांडवों का साथ दिया था।

महाजनपद के दौरान अन्य क्षेत्र

- वत्स - ग्वालियर
- चेदि — खजुराहो
- अनूप - निमाड़ (खंडवा)
- दर्शण - विदिशा
- तुन्डीकेर — दमोह
- नलपुर - नरवर (शिवपुरी)

मौर्य राजवंश

- **पुरुगुप्त** चंद्रगुप्त के शासन के दौरान **मालवा क्षेत्र का राज्यपाल** था।
- बिन्दुसार द्वारा अशोक को **अवंती का राज्यपाल** नियुक्त किया गया था।
- अशोक ने उज्जैन पर 11 वर्षों तक राज्यपाल के रूप में शासन किया।
- **गुर्जर** (दतिया), **रूपनाथ** (जबलपुर), **सांची** (रायसेन), **पान गुरड़िया** (सीहोर) के **शिलालेखों** से साबित होता है कि अशोक ने इन क्षेत्रों पर शासन किया था।
- गुर्जर शिलालेख से अशोक का नाम **देवनामप्रिय राजा अशोक** मिला।
- अशोक ने **बेसनगर** (विदिशा) **की श्रीदेवी/महादेवी से** विवाह किया की।
- कुणाल अशोक के चार पुत्रों में से एक थे, उन्होंने उज्जैन में 8 वर्षों तक शासन किया।
- अशोक की मृत्यु के बाद भी, वह प्रांतीय शासक के रूप में कार्य करता रहा। इसके बाद उसका पुत्र **सम्प्रति उज्जैन का प्रान्तीय शासक** बना।
- सम्प्रति ने धीरे-धीरे दक्षिण चौकी के आस-पास के क्षेत्र को जीत लिया और उस पर कब्जा कर लिया।

मध्य प्रदेश में स्तूप

- **उज्जैन का बौद्ध स्तूप:** बुद्ध के महापरिनिर्वाण के बाद अवंती का अधिग्रहण हुआ, जिस पर वैश्य टेकरी में स्तूप बनाया गया। यह अब तक मिले स्तूपों में सबसे बड़ा है।
- **सांची** - यहाँ मुख्य रूप से तीन स्तूप हैं और अन्य छोटे स्तूप भी हैं, सांची को तीसरी शताब्दी में **वैदिक गिरि** या **चैत्यगिरी** कहा जाता था और दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व में **काकवान कहते थे।**
  - **सर जॉन मार्शल** ने 1912 ई. और 1920 ई. के बीच **सांची स्तूप का जीर्णोद्धार** करवाया।
  - **स्तूप क्रमांक 1** जो बहुत महत्व का बताया जाता है, उसमें **सारिपुत्र** और **महामोगली की अस्थियाँ** रखी गई हैं।
- **सतधारा स्तूप** - सांची के पास एक **प्राचीन बौद्ध केंद्र।** कनिंघम ने इसकी खोज **1853** ई. में की थी, अब तक यहाँ **40 स्तूप और 17 विहार** मिले हैं।
- **अंधेर का स्तूप** - विदिशा से 12 किलोमीटर दूर अंधेर नामक स्थान से तीन स्तूपों के अवशेष मिले हैं।
- **सोनारी स्तूप** - सांची से 9 किलोमीटर दूर **8 स्तूपों के अवशेष** यहाँ मिले हैं, जिनमें से **स्तूप नंबर 1** सबसे बड़ा है, जो **240 फीट चौकोर प्रांगण** में स्थित है।
  - **भोजपुर के स्तूप** - विदिशा से 10 किलोमीटर की दूरी पर 37 अवशेष मिले हैं।
  - इसी तरह रायसेन जिले के **खरवई से दो स्तूपों और विहारों के अवशेष** मिले हैं।
- **भरहुत का स्तूप** मध्य प्रदेश में **सतना के पास नागोद** में स्थित है, इसकी खोज 1873 ई. में हुई थी।
- **देउर कोठार** रीवा जिले की तहसील के अंतर्गत आता है, जिसे अशोक के समय तीसरी शताब्दी में बनाया गया था।
- **तुमैन स्तूप** अशोक नगर में स्थित है, जो विदिशा और मथुरा को जोड़ने वाले व्यापार मार्ग पर स्थित था। प्राचीन काल में इसे **तुम्ब्वन** कहा जाता था।
- **कसरावद के स्तूप** : खरगोन जिले में स्थित कसरावद में 11 स्तूप मिले हैं।
- **महेश्वर और नवदाटोली**: महेश्वर की पहचान प्राचीन **दक्षिणी अवंती की राजधानी माहिष्मती** से हुई है।
  - यह नगर प्रतिष्ठान और उज्जैन के बीच दक्षिणी सड़क पर स्थित था।
- **पान गुरड़िया** से परिक्रमा पथ वाला एक स्तूप मिला है।

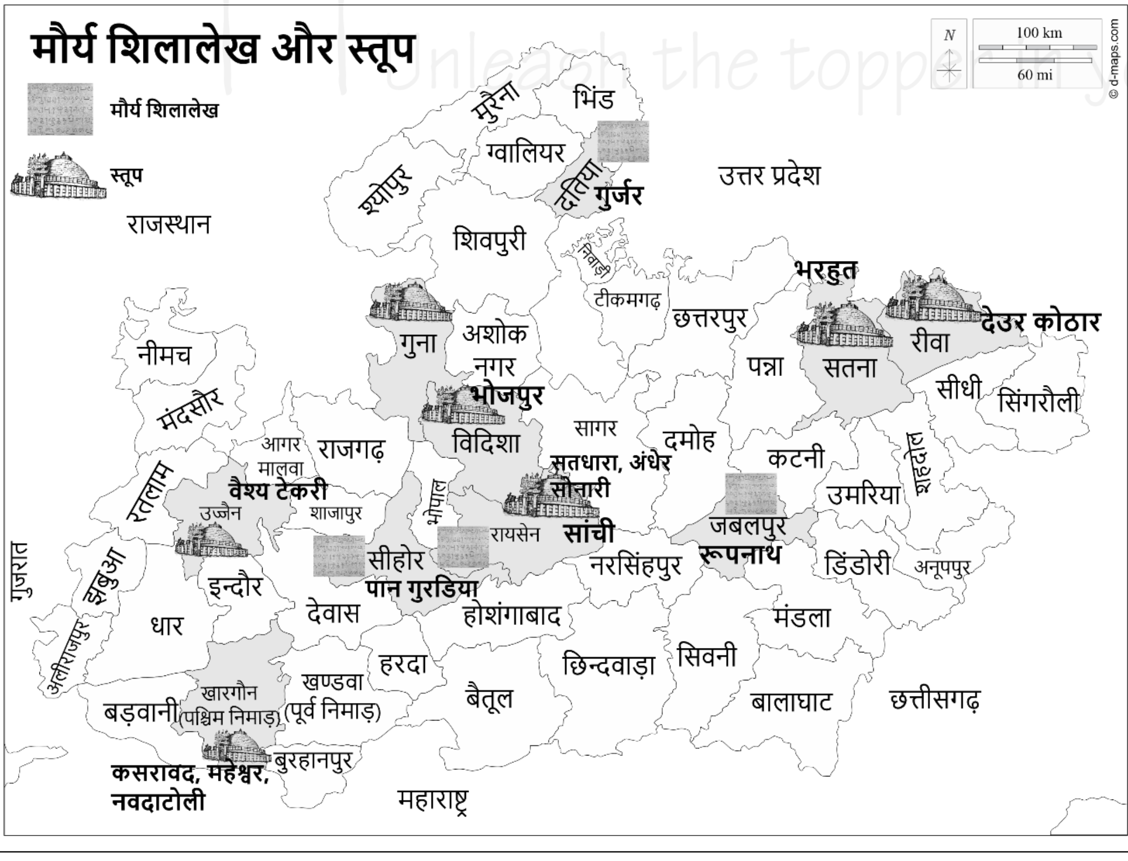

मौर्यों के बाद

शुंग राजवंश

- **मालविका अग्निमित्रम** के अनुसार, अग्निमित्र ने विदिशा पर अपने पिता **पुष्यमित्र शुंग** के प्रतिनिधि के रूप में शासन किया था।
- राजा भागवत के शासन के दौरान, **हेलियोडोरस** (एंटीलसीदास (तक्षशिला के इंडो-ग्रीक राजा)) विदिशा आए और **गरुड़ स्तम्भ की स्थापना** की यह स्थानीय रूप से **खाम बाबा** के नाम से जाना जाता है।
- **भरहुत स्तूप** (सतना) शुंग काल के दौरान निर्मित।
- इस दौरान **सांची** की बाहरी दीवार भी बनाई गई थी।

सातवाहन राजवंश

- सातवाहनों ने **कण्व वंश** को समाप्त करने से पहले **27 ईसा पूर्व** में शासन किया था।
- **सांची स्तूप की वेदिका** पर उत्कीर्ण अभिलेख से मालवा पर शातकर्णी से पहले के शासन से संबंधित सूचना मिलती है।
- कुछ सातवाहन सिक्के **देवास**, **उज्जैन**, **जमुलिया**, **तेवर**, **भेड़ाघाट** से प्राप्त हुए हैं।
- पुराणों के अनुसार, सिमुक ने पूर्वी मालवा (विदिशा) क्षेत्र पर शासन करने वाले **कण्वों और शुंगों की शक्ति** को समाप्त करके **सातवाहन वंश** की स्थापना की।
- शातकर्णी के राज्यों में **अनूप** (निमाड़), **आकर** (पूर्वी मालवा) और **अवंती** (पश्चिम मालवा) शामिल थे।
- **सातवाहन का अभिलेख** मध्यप्रदेश के सांची से प्राप्त हुआ है।
- उसके पुत्र पुलुमावी की **कर्दमन वंश** (सीथियन राजवंश) से हार हुई।
- शातकर्णी प्रथम को **सातवाहन वंश का सबसे शक्तिशाली राजा** माना जाता है।

भारत-यूनानी शासक 200 ईसा पूर्व से 50 ईसा पूर्व तक

- डेमेट्रियस के उत्तराधिकारी, **मिनांडर** (मिलिंद) ने मध्यप्रदेश पर हमला किया इसकी जानकारी उसके **बालाघाट के सिक्कों** से मिलती है।
- **नागसेन** ने उसे **बौद्ध धर्म में परिवर्तित** कर दिया।

शक शासन

- शकों ने भारत के पश्चिमी भाग से **भारत-यूनानी शासन** की जगह ली और 4 क्षत्रपों अर्थात् **पंजाब**, **मथुरा**, **उज्जैन** और **नासिक** की स्थापना की।
- शकों की संयुक्त शासन प्रणाली में एक परंपरा थी कि वरिष्ठ शासक "**महाक्षत्रय**" की उपाधि धारण करता था और अन्य कनिष्ठ शासकों को "**क्षत्रय**" कहा जाता था।

उज्जैनी क्षत्रप (कर्दमक वंश)

- **चष्टन** द्वारा स्थापित और बाद में **रुद्रदामन** द्वारा शासित।
- **चष्टन वंश** का सबसे शक्तिशाली शासक **नहपान** था।
- वह सातवाहन राजा **गौतमी पुत्र शातकर्णी** के समकालीन थे।
- नासिक शिलालेख से ज्ञात होता है कि गौतमी पुत्र शातकर्णी ने पूर्वी मालवा तथा पश्चिमी मालवा द्वारा **नहपान** को परास्त किया।
- चंद्रगुप्त '**विक्रमादित्य**' द्वारा **अंतिम कर्दमक राजा रुद्रसेन** की हत्या की गई थी।

गुप्त काल

- गुप्त काल के दौरान समुद्रगुप्त ने **सागर**, **दमोह**, **जबलपुर** के माध्यम से दक्षिण की ओर प्रवेश किया तथा उसने **शक राजा श्रीधरवर्मन** को हराया और सागर में **एरण शिलालेख** अंकित करवाया।
- जिसका प्रमाण उदयगिरि में **जैन गुफा** में मौजूद है, जिसके लेख में **महाराजाधिराज राम गुप्त** का उल्लेख है, ताँबे के सिक्के पूर्वी मालवा में **विदिशा और एरण** से प्राप्त हुए हैं।

- विदिशा के निकट दुर्जनपुरा गाँव से चौथी शताब्दी की तीन मूर्तियाँ मिलती हैं, जिन पर महाराजाधिराज **रामगुप्त** का उल्लेख **ब्राह्मी लिपि** में मिलता है।
- चंद्रगुप्त द्वितीय ने शक राजा को हराया और **उज्जैनी** को अपनी **दूसरी राजधानी** के रूप में स्थापित किया।
- **प्रथम राजधानी पाटलिपुत्र** थी।
- **उदयगिरि** (विदिशा) से **प्राप्त शिलालेख** से चंद्रगुप्त द्वितीय के वीरसेन (युद्ध और शांति) मंत्री के बारे जानकारी मिलती है।
- उदयगिरि गुफाओं का निर्माण गुप्त राजाओं द्वारा किया गया था, जहाँ **वराह अवतार** महत्त्वपूर्ण है।
- **धार की बाघ गुफाओं** का संबंध भी गुप्त वंश से है।
- जबलपुर में स्थित **तिगवा गुप्त काल का एक महत्त्वपूर्ण विष्णु मंदिर** है।

गुप्तकाल के अभिलेख

मंदसौर शिलालेख

- गुप्त सम्राट कुमारगुप्त द्वितीय से संबंधित यह अभिलेख **मंदसौर** (दासपुर) से प्राप्त हुआ है।
- संस्कृत में **वत्सभट्टी** द्वारा लिखित हैं।
- इस शिलालेख में बंधुवर्मन के शासनकाल का उल्लेख मिलता है।

तुमैन शिलालेख

- **अशोकनगर** जिले में स्थित है।
- **कुमारगुप्त** के बारे में जानकारी मिलती है।

सुपिया शिलालेख

- **रीवा** में स्थित है।
- इसमें घटोत्कच के समय से गुप्त राजा के कालक्रम का वर्णन है।

एरण शिलालेख

- यह सागर जिले में स्थित है।
- हूणों के आक्रमण की जानकारी देता है

सांची शिलालेख

- इसमें हरि स्वामिनी द्वारा **आर्य संघ** को दिए गए दान का उल्लेख है।

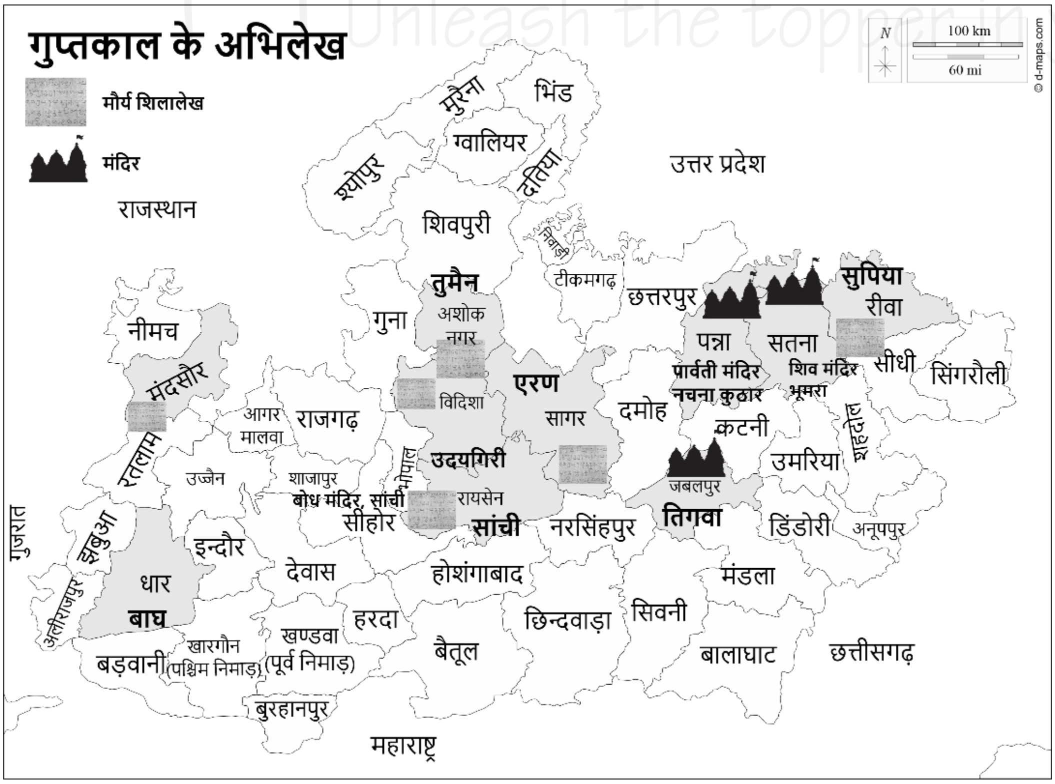

गुप्त काल के मंदिर

- तिगवा का विष्णु मंदिर - जबलपुर
- भूमरा का शिव मंदिर - नागौद (सतना)
- पार्वती मंदिर नचना कुठार(अजय गढ़ पन्ना)
- बोध मंदिर सांची (रायसेन)
- शिव मंदिर - खोह (नागौद)

अन्य राजवंश

वाकाटक वंश (150 ई. से 450 ई.)

- विंध्यशक्ति (250-270 AD) द्वारा **विदिशा में स्थापित।**
- महत्त्वपूर्ण **राजा प्रवरसेन** थे जिन्होंने **4 अश्वमेध यज्ञ** किए और पवाया (ग्वालियर) के **नाग वंश** के साथ **वैवाहिक संबंध** स्थापित किये।
- एक अन्य राजा प्रवरसेन द्वितीय ने **महाकाव्य सेतुबंध** लिखा था।

हूण आक्रमण

- 5वीं शताब्दी में **हूणों के नेता मिहिरकुल** ने मध्यप्रदेश के पंजाब से सागर तक विजय प्राप्ति के लिए आक्रमण किये।
- **तोरमण** के शासन के प्रथम वर्ष के अभिलेख सागर के निकट **एरण** में उपलब्ध **विशाल वराह मूर्ति** से मिलते हैं।
- तोरमण के पुत्र **मिहिरकुल** ने ग्वालियर के आस-पास शासन किया
- मंदसौर के **औलीकर वंश** ने मिहिरकुल को पराजित कर मालवा से खदेड़ दिया।

मंदसौर के औलीकर राजवंश

- दशपुर में **जयवर्मन** द्वारा स्थापित।
- एक अन्य राजा बंधुवर्मन ने **कुमारगुप्त की सर्वोच्चता** स्वीकार की।
- नरवर्मन के नाम पर पहला शिलालेख मिला।
- यशोवर्मन ने **अंतिम हूण राजा मिहिरकुल** को हराया और भारत से हूणों के शासन को समाप्त कर दिया
- मालवा क्षेत्र का नाम **औलीकरों** द्वारा दिया गया था।

परिव्राजक राजवंश

- परिव्राजक ने पन्ना के पास बुंदेलखंड में शासन किया।
- प्रथम राजा- **देवदया**
- प्रमुख राजा- **हस्तिन**
- हस्तिन के शिलालेख- **खोह**, **जबलपुर** और **मझगंवा**

उच्चकल्प के शासक

- उच्च कल्प का आधुनिक भाग **उंचेहरा** (सतना) है।
- ये परिव्राजक महाराजाओं के पड़ोसी थे।
- इस वंश के **प्रथम राजा देवादय** थे।

पुष्यभूति राजवंश/वर्धन साम्राज्य

- **राजा राज्यवर्धन** को मालवा के राजा देवगुप्त ने मार दिया था लेकिन अगले राजा **हर्षवर्धन** ने बदला लिया और नर्मदा के दक्षिणी तट पर देवगुप्त को हराया।

शैल वंश

- आठवीं शताब्दी में महाकौशल के पश्चिमी भाग में **शैल वंश** की स्थापना।
- **राधोली** (बालाघाट जिला) से प्राप्त एक ताँबे की प्लेट से **शैल वंश की वंशावली** प्राप्त होती है।
- प्रथम राजा - **श्रीवर्धन**, उसका पुत्र **पत्थु वर्धन** जिसने **गुर्जरों पर विजय** प्राप्त की।

मौखरी वंश

- मध्यप्रदेश के पूर्वी निमाड़ जिले में, **असीरगढ़ किले** के महाराज सर्व वर्मन का एक **ताम्र मुहर अभिलेख** प्राप्त हुआ है, जिसके संबंध में कुछ विद्वानों का मत है कि **मौखरी राज्य पूर्वी निमाड़ जिले** तक फैला हुआ था।

मैकाल के पांडव वंश

- **अमरकंटक** और वर्तमान **अनूपपुर जिले** के आस-पास के क्षेत्र को **मैकाल** के नाम से जाना जाता था।
- पांडव वंश के राजाओं के बारे में जानकारी **राजा भरत बल के बसनी ताम्र पत्र** से प्राप्त होती है।
- पहला राजा- **जयबल**, उसका पुत्र वत्सराज।
- बाद में गुप्त वंश की शक्ति कम होने के कारण स्थिति का लाभ उठाकर राजा स्वतंत्र हो गया।
- अंतिम सम्राट – **भरतबल**

कलचुरी राजवंश

- कलचुरी **हैहय वंश की एक** शाखा है, मध्यप्रदेश के प्राचीन इतिहास में कलचुरी वंश का महत्त्वपूर्ण स्थान है।
- मध्यप्रदेश में कलचुरी वंश की **दो प्रमुख शाखाएँ** - **माहिष्मती** की कलचुरी और **त्रिपुरी** की कलचुरी शाखाएँ थीं ।

माहिष्मती का कलचुरी वंश

- इस कलचुरी वंश की प्राचीन **राजधानी माहिष्मती** थी।
- माहिष्मती में मध्यप्रदेश राज्य के **महेश्वर**, **ओंकारेश्वर मन्धाता** और **मंडला** नामक तीन स्थान शामिल थे।
- इसके तीन प्रमुख राजाओं - **कृष्णराज**, **शंकरगढ़** और **बुद्ध राजा** के नाम मिलते हैं।

त्रिपुरी का कलचुरी

- चालुक्यों द्वारा पराजित होने के बाद, बुद्धराज के वंशज माहिष्मती को छोड़कर **चेदि देश** में भाग गए और **त्रिपुरी में अपनी राजधानी** स्थापित की।
- त्रिपुरी शाखा के **संस्थापक वामराज** थे।
- शासक **कोक्कल प्रथम** इस वंश का एक सक्षम और प्रतापी राजा था।
- गंगदेव के पुत्र **लक्ष्मी कर्ण** या **कर्ण देव**, कलचुरि राजाओं में सबसे प्रतापी राजा थे।
- कर्ण देव को **हिंद का नेपोलियन** कहा जाता है।
- कर्ण देव ने जबलपुर के पास अपने नाम पर **कर्णावती शहर** की स्थापना की और **अमरकंटक के मंदिरों** का निर्माण किया।
- कलचुरी वंश का **अंतिम शासक विजय सिंह** था।

राष्ट्रकूट राजवंश

- राष्ट्रकूट वंश की दो शाखाएँ सातवीं से दसवीं शताब्दी तक मध्य प्रदेश में रहीं।
- **पहली शाखा**
  - इस वंश की एक शाखा ने **बैतूल-अमरावती क्षेत्र** पर शासन किया।
  - राज्य की चार शाखाएँ - **दुर्गाराज**, **गोविंद राज**, **स्वामीराज** और **नन्नराज।**
  - **तीतर खेड़ी** और **मुलताई** (बैतूल) से नन्नाराज के दो **ताम्र पत्र** प्राप्त होते हैं।
  - दंतिदुर्ग ने अपने शासन काल में इस शाखा को मिला लिया होगा।
- **दूसरी शाखा**
  - इसका शक्तिशाली **राजा दंतिदुर्ग** (744 ई.) था।
  - उन्होंने महानदी और नर्मदा के आस-पास कई युद्ध लड़े।
  - उज्जैन के **गुर्जर शासकों** ने राष्ट्रकूटो को हराया और शासन किया।

- उन्होंने लगभग 750 ई. में उज्जैन में **हिरण्यगर्भ यज्ञ** करके खुद को स्थापित किया।
- दंतिदुर्ग के उत्तराधिकारी कृष्ण ने मध्य प्रदेश के पूरे **मराठी क्षेत्र पर अधिकार** कर लिया

गुर्जर-प्रतिहार वंश

- इस वंश का **प्रथम शासक हरिवंश** था परन्तु इस वंश की स्थापना वास्तविक रुप से **नागभट्ट प्रथम** ने की।
- इसने अरबों को हराया और मालवा को **मुस्लिम आक्रमण** से बचाया
- यह दंतिदुर्ग द्वारा पराजित हुआ।

नाग वंश

- नाग वंश का उदय **ग्वालियर**-**विदिशा क्षेत्र** में हुआ,
- पुराणों में विदिशा में शासन करने वाले नाग-वंश के राजाओं में **शेष**, **भोगिन**, **सदाचंद्र**, **धन धर्म**, **भूतनंदी**, **शिशु नंदी** और **यशोनंदी** का उल्लेख है।
- दूसरी शताब्दी ई. के अंतिम चरण में, विदिशा ग्वालियर क्षेत्र के एक नए **नाग वंश का उदय** हुआ।
- **संस्थापक**-वृषनाग, जिसका एक सिक्का विदिशा से प्राप्त हुआ है
- वृषनाग के बाद, **भीमनाग** शासक था, जिसने अपनी राजधानी को **विदिशा से पद्मावती** (ग्वालियर) **स्थानांतरित** कर दिया।
- इस वंश के अंतिम शासक **गणपतिनाग** को गुप्त शासक समुद्रगुप्त ने पराजित कर **नाग वंश का अंत** किया था।

बोधि और महा राजवंश

- दूसरी-तीसरी शताब्दी ई. में, वर्तमान तेवर (जबलपुर) के त्रिपुरी क्षेत्र पर **बोधि वंश के राजाओं** का शासन था।
- त्रिपुरी की खुदाई से प्राप्त **मिट्टी**-मुद्रा अंकन में चार शासकों- श्री **बोधि**, **वासु बोधि**, **चंद्र बोधि** और **शिव बोधि** के नामों का उल्लेख है।
- इस समय के आस-पास मध्य प्रदेश के **बुंदेलखंड क्षेत्र** पर **महावंश के शासकों** का शासन था।
- इस वंश का प्रथम शासक **भीमसेन** था।
- कौशाम्बी और भाटा के अलावा बाँधवगढ़ जिले के उमरिया से महावंश के शासकों के सिक्के, मुहर और शिलालेख प्राप्त हुए हैं।

वाकाटक वंश

- वाकाटक वंश की उत्पत्ति के बारे में इतिहासकारों में मतभेद है।
- फिर भी कुछ इतिहासकार बुंदेलखंड को **वाकाटक वंश का मूल स्थान** मानते हैं।
- वाकाटक वंश के संस्थापक **विंध्य शक्ति** थे, जिन्हें **पुराणों** में मूल रूप से **विदिशा का शासक** कहा गया था।
- रुद्र सेन प्रथम के राज्य में **जबलपुर** और **बालाघाट** शामिल थे।
- रुद्र सेन प्रथम की **राजधानी नागपुर** थी।
- वाकाटक राज वंश के अंतिम शासक **पृथ्वी सेन द्वितीय के अभिलेख** की प्राप्ति बालाघाट जिले से हुई है।

2 CHAPTER मध्य प्रदेश का मध्यकालीन इतिहास

मालवा का परमार राजवंश

- **परमार अभिलेखों** में परमारों की उत्पत्ति **ऋषि वशिष्ठ** द्वारा '**अबू पर्वत**' पर आयोजित **यज्ञ वेदी** से हुई बताई गई है।
- अन्य अभिलेख - '**उदयपुर प्रशस्ति**', '**नागपुर प्रशस्ति**', '**वसंतगढ़ अभिलेख**', '**पट नारायण अभिलेख**', '**जैन अभिलेख**'

उपेंद्र

- उन्हें राष्ट्रकूट सम्राट **गोविंद-तृतीय** द्वारा शासक नियुक्त किया गया था।
- '**उदयपुर प्रशस्ति**' में उनकी प्रशंसा की गई।
- आठवीं शताब्दी के उत्तरार्ध में राजनीतिक परिस्थितियों का लाभ उठाकर वह **'अवंती' के शासक** बने।
- 818 ई. में **गोविंद तृतीय** की मृत्यु हो गई, जिसका लाभ उठाकर इन्होंने राज्य का विस्तार करना शुरू कर दिया और **मालवा पर अधिकार** कर लिया।

वैर सिंह

- उपेंद्र के पुत्र वैर सिंह उनके अगले उत्तराधिकारी बने।
- परमारों की **प्रारंभिक राजधानी उज्जैन** थी, लेकिन वैर सिंह द्वितीय के शासनकाल के दौरान, परमारों ने अपनी राजधानी को **उज्जैन से धार में स्थानांतरित** कर दिया।
- मालवा के परमार वंश के **सियक प्रथम** का नाम **उदयपुर प्रशस्ति** में मिलता है।
- सियक प्रथम के बाद 893 ई. तक उदयपुर प्रशस्ति में किसी राजा का उल्लेख नहीं मिलता।

कृष्णराज या वाक्पति I

- यह प्रतिहार नरेश **महेंद्र पाल** (892-908 ई.), **भोज II** और **महिपाल** (912-942 ई.) तीनों के समकालीन थे।
- इनका नाम '**उदयपुर प्रशस्ति**' और '**नवसाहसांकचरित**' दोनों में वर्णित है।
- वाक्पतिप्रथम ने '**परम भट्टारक महाराजाधिराज परमेश्वर**' की शाही उपाधि धारण की।

हर्ष / सियक II

- उन्हें "**सिन्ह दत्त भट्ट**" भी कहा जाता था।
- परमार वंश का पहला स्वतंत्र राजा **सियक द्वितीय** था।
- राष्ट्रकूट दक्षिण में केंद्रित थे और **चोल संघर्ष** में व्यस्त थे।
- ऐसे समय का लाभ उठाकर सियक द्वितीय ने तुरंत 949 ई. में '**महाराजधिराजपति**' और '**महामंडलिक चूड़ामणि**' की उपाधि धारण की
- नवसाहसांकचरित' में '**सियक द्वितीय**' की विजयों का विस्तृत उल्लेख मिलता है। उसने हूणों को भी पराजित किया।
- '**हूणमंडलिक**' की स्थिति परमार और चेदि वंश के राज्यों के बीच यानी नर्मदा के उत्तर में आधुनिक '**होशंगाबाद**' और **'महू' के बीच** थी।
- चंदेल के **खजुराहो शिलालेख** (956 ई.) से पता चलता है कि यशोवर्मन चंदेल ने मालवा राजा को पराजित किया।
- इस समय चंदेल का साम्राज्य विदिशा तक फैल गया और वह मालवा की सीमा में प्रवेश कर गया।
- सीयक ने अंतिम काल में राष्ट्रकूटो की राजधानी 'मान्यखेत पर अधिकार कर लिया।

वाक्पति द्वितीय या मुंज या उत्पल (974 से 994 ई.)

- **सिंधुराज** (997-1000 ई.) - यह मुंज का छोटा भाई था, लेकिन मुंज को सिंधु राज के पुत्र भोज से अधिक लगाव था और उसे युवराज के रूप में नियुक्त किया।
- सिंधुराज ने **नवसहसांक**, **नवीनसाहसंक**, **कुमार नारायण**, **अवंतीश्वर**, **परमार महाभृत**, **मालव** राज की उपाधि धारण की।
- सिंधुराज ने हूणों पर विजय प्राप्त की। **बड़नगर प्रशस्ति** (1151 ई.) में इसका विशेष उल्लेख मिलता है।

Unleash the topper in you

राजा भोज (1000-1055 ई.)

- वह **कला और संस्कृति** के महान **संरक्षक** थे।
- भोजपुर **शिव मंदिर** का निर्माण किया।
- धार में संस्कृत सीखने के लिए **भोजशाला** खोली।
- इन्होंने चंदेल राजा विद्याधर पर हमला किया, लेकिन 1008 ई. में हार गये।
- भोज ने मोहम्मद गजनवी के खिलाफ **हिंदुशाही राजा आनंदपाल** की मदद की
- 1047 में, चालुक्य राजकुमार **सोमेश्वर प्रथम** ने भोज को हराया और धार को लूट लिया, जिसपे जल्द ही पुनः कब्जा कर लिया गया।
- उन्होंने भोपाल में **भोजताल झील** का निर्माण कराया।
- फरिश्ता के अनुसार राजा वर्ष में दो बार भोज का आयोजन करता था, जो 40 दिनों तक चलता था।
- **रोहक** इसके प्रधान मंत्री थे और **कुलचंद्र**, **शाढ़** तथा **सुरादित्य** उनके तीन महान सेनापति थे।
- **राजा भोज के साहित्य - तत्त्व प्रकाश**; **समरगढ़-सूत्रधार**, **सिद्धान्त संग्रह**

महलकदेव

- अंतिम परमार राजा महलकदेव था जिसे **आइन-उल-मुल्क** (अलाउद्दीन खिलजी का सेनापति) द्वारा 1305 ई.में पराजित हुआ।
- राजा भोज के बाद जयसिंह प्रथम, उदयादित्य, लक्ष्मदेव, नर्मदेव, यशोवर्मन, जयवर्मन, परमार महा कुमार आदि राजा बने।
- इसके बाद परमार साम्राज्य कई छोटे टुकड़ों में विभाजित हो गया, **अंतिम राजा भोज द्वितीय** था, जिसके बाद वर्ष 1305 की तारीख मालवा में **महलकदेव के शासनकाल** के लिए जानी जाती है।
- **सुल्तान जलालुद्दीन खिलजी** ने मालवा पर आक्रमण किया और उसे दिल्ली सल्तनत में मिला लिया।

साहित्य, कला और वास्तुकला

- **वाक्पति द्वितीय मुंज** एक कवि-हृदय राजकुमार थे, **यशोरुपवलोक** के लेखक धनिक, **नवसाहसांकचरित** के लेखक पद्मगुप्त, **दशरुपक** के लेखक धनंजय, उनके दरबार में रहते थे।
- राजा मुंज को **कविवृष** भी कहा जाता था।
- **भोज कालीन** या भोज के नाम से उपलब्ध ग्रंथों की सूची हाल ही में **भगवती लाल राजपुरोहित** की पुस्तक भोजराज में प्रकाशित हुई थी जो इस प्रकार है
    1. **साहित्य शास्त्र**: सरस्वती कंठाभरण, श्रृंगार प्रकाश
    2. **साहित्य**: चंपू रामायण, श्रृंगार मंजरी कथा, सुभाषित प्रबंध, विद्या विनोद, शालिकथा, अवनिकुर्मसतर्क, कोदण्डकाव्य, महाकाली विजय, वाग्यदेवी स्तुति
    3. **व्याकरण**: प्राकृत व्याकरण, सरस्वती कंठाभरण
    4. **कोष**: नामनालिका, अम्खायाख्या, अनेकार्थकोश
    5. **संगीत**: गीत प्रकाश
    6. **इतिहास** :- संजीवनी
    7. **दर्शन**: न्यायवार्तिक - तत्व प्रकाश, सिद्धान्त संग्रह, सिद्धान्त सार विधि, राज मार्तंड, योग सूत्र वृत्ति, शिव तत्व रत्न कालिका, तत्व चंद्रिका
    8. **खगोल विज्ञान और ज्योतिष**: आदित्य प्रताप सिद्धान्त, राजमार्तंड, राजमृगांक, विद्वज्ञानवल्लभ (प्रश्न विज्ञान)

कच्छपघात राजवंश

- कच्छपघात वंश **मध्य प्रदेश के उत्तरी भाग** का एक महत्त्वपूर्ण राजवंश था।
- इसका **मूल स्थान गोपाचल क्षेत्र** है जिसके अंतर्गत **मध्य प्रदेश के ग्वालियर, मुरैना, शिवपुरी, गुना, अशोकनगर और दतिया** जिले के क्षेत्र शामिल हैं।
- अतीत में, कच्छपघात **गुर्जर प्रतिहार वंश के सामंत** के रूप में काम करता है।

देव वर्मन

- **ग्वालियर** में **तोमर राज्य की** स्थापना की।
- **चतुर्भुज मंदिर, लक्ष्मीनारायण मंदिर, जीत महल, जैत या जीत स्तंभ और मंडेर दुर्ग** का निर्माण करवाया।
- **कीर्तिपाल** के शासन काल में **बहलोल लोदी ने ग्वालियर पर** आक्रमण किया।

तोमर वंश

- **राजा मानसिंह तोमर वंश** का सबसे **शक्तिशाली** राजा था।
- **राजा मानसिंह को** अपने शासनकाल में **बहलोल लोदी, सिकंदर लोदी और इब्राहिम लोदी** के **आक्रमणों** का सामना करना पड़ा था।
- 1517 ई. में, **इब्राहिम लोदी ने** ग्वालियर पर आक्रमण किया और **ग्वालियर का किला** जीता, इस युद्ध में **राजा मानसिंह की मृत्यु** हो गई।
- **राजा मानसिंह द्वारा** अपने शासनकाल में बनवाया गया **मान मंदिर और गुजरी महल** इसके बेहतरीन उदाहरण हैं।
- मान सिंह के पुत्र **विक्रमादित्य तोमर वंश के** अंतिम शासक थे।
- **पानीपत की** पहली लड़ाई में **इब्राहिम लोदी** के साथ **विक्रमादित्य** मारा गया था।
- इस प्रकार **ग्वालियर** राज्य के **तोमर वंश का अंत** हो गया।
- **कोहिनूर** नाम का विश्व प्रसिद्ध **हीरा** जो वर्तमान में **इंग्लैंड के महल** को सुशोभित करता है, ग्वालियर के तोमर वंश का खजाना है।
- यह तोमर **जागीरदार अजीत सिंह** द्वारा **मुगल वंश** को **आगरा किले** और खुद पर **हमला** न करने की शर्त के रूप में दिया गया था।

मध्य प्रदेश के प्रमुख राजवंश और उनके क्षेत्र	
राजवंश	**क्षेत्र**
चंदेल राजवंश	बुंदेलखंड
तोमर राजवंश	ग्वालियर
परमार राजवंश	मालवा (धार)
बुंदेल राजवंश	बुंदेलखंड
होल्कर राजवंश	मालवा (इंदौर)
सिंधिया राजवंश	ग्वालियर
कारुष राजवंश	बघेलखंड
चंद्र राजवंश	बघेलखंड से बुंदेलखंड
यादव वंश	चंबल बेतवा की नदियों का मध्य भाग
शुंग राजवंश	विदिशा
नागवंश	विदिशा - ग्वालियर
बोधि राजवंश	जबलपुर (त्रिपुरी/तेवर)
मघ राजवंश	बघेलखंड
अमीर राजवंश	अहिश्वश (विदिशा/झाँसी)
वाकाटक वंश	विंध्य प्रदेश
औलिकर राजवंश	दासपुर (मंदसौर)
मौखरी वंश	मालवा (दासपुर, मंदसौर)
परिव्राजक राजवंश	बुंदेलखंड
शैल राजवंश	महाकौशल
पांड्य राजवंश	मैकाल प्रदेश (अमरकंटक)

चंदेल राजवंश

- **राजधानी: खजुराहो**
- स्थापना: 871
- **चंद्रोदय ऋषि** के वंशज
- पहला राजा: **नन्नुक**
- नन्नुक के पौत्र **जयसिंह** के नाम पर इसका नाम **जेजाकभुक्ति** रखा गया।
- **हर्षदेव** चंदेल वंश के पहले **महत्त्वपूर्ण राजा** थे, जिनके शासन काल में चंदेल वंश को **उत्तर भारत के शक्तिशाली राजवंशों** में गिना जाता था।
- हर्षदेव (905 से 925) के बाद उनका पुत्र **यशोवर्मन** गद्दी पर बैठा, जिसने **कन्नौज के प्रतिहारों को** समाप्त कर **राष्ट्रकूट से कालिंजर** का किला जीत लिया।
- यशोवर्मन (लक्ष्मणवर्मन) ने **खजुराहो के प्रसिद्ध विष्णु मंदि**र का निर्माण कराया।

धंग देव (950 से 1007)

- **प्रतिहार शक्ति** के कमजोर होते ही इसने एक स्वतंत्र राज्य की घोषणा कर दी। **धंगदेव ने 'महाराजाधिराज**' की **उपाधि** धारण की।
- उसका राज्य **कालिंजर से मालव नदी** (बेतवा), मालव नदी से **कालिंदी**, कालिंदी से **चेदि** और चेदि से **गोपाद्रि (ग्वालियर)** तक था।
- इसने शुरू में **कालिंजर को** अपनी **राजधानी** बनाया, फिर **खजुराहो को** अपनी **राजधानी** बनाया।
- इसने **भटिंडा के** शाही शासक **जयपाल को सुबुक्तगीन के खिलाफ** सैन्य सहायता भेजी।
- **धंग** ने **खजुराहो के** अधिकांश **मंदिरों का** निर्माण कराया, इसने **जैन समुदाय** के लोगों को खजुराहो में मंदिर बनाने की अनुमति भी दी।
- **खजुराहो में** दो प्रमुख - **पारसनाथ और विश्वनाथ मंदिर** हैं।
- उनके शासनकाल के दौरान, **राजा धंग** द्वारा खजुराहो में **जगदंबी नामक वैष्णव मंदिर** और **चित्रगुप्त नामक सूर्य मंदिर** का निर्माण किया गया था।
- उन्होंने प्रयाग में **गंगा-यमुना के पवित्र संगम में** अपना शरीर त्याग दिया।

विद्याधर (1017 से 1029 ई.)

- **महमूद गजनी की** महत्वाकांक्षाओं का सफलतापूर्वक **विरोध** किया।
- **परमार शासक भोज** और **त्रिपुरी कलचुरी शासक गंगदेव** भी पराजित हुए।
- **विद्याधर के बाद** उसका पुत्र **विजयपाल** गद्दी पर बैठा, लेकिन बाद में उसे **गंगदेव की अधीनता** स्वीकार करनी पड़ी।
- इस वंश का **अंतिम योग्य शासक परमार्दिदेव** (1165 ई. से 1203 ई.) (परमल) था।
- उन्होंने **दशौन अधिपति** की **उपाधि** धारण की
- उन्हें 1182 ई. में **पृथ्वीराज चौहान** और 1203 ई. में **कुतुबुद्दीन ऐबक** ने हराया था।
- **कालिंजर के युद्ध** में **परमार्दिदेव** की मृत्यु हो गई।
- **आल्हा और उदल परमार्दिदेव के दरबारी** थे।

3 CHAPTER 13-15वीं शताब्दी के दौरान मध्य प्रदेश

कुतुबुद्दीन ऐबक (1206-1210 ई.)

- 1019 ई. में, ग्वालियर पर महमूद गजनवी द्वारा अधिकार कर लिया गया ।
- 1195 ई. में मोहम्मद गौरी ने ग्वालियर पर आक्रमण किया।
- 1231 ई. में इल्तुतमिश ने ग्वालियर पर अधिकार कर लिया।

बुंदेलखंड अभियान

- मध्य प्रदेश में गौरी के शासनकाल के दौरान कुतुबुद्दीन ऐबक ने बुंदेलखंड पर विजय प्राप्त की।
- उसने चंदेल शासक परमर्दिदेव को हराया और कालिंजर, महोबा और खजुराहो पर अधिकार कर लिया।
- 1202 ई. में, ऐबक ने चंदेल के अधीन एक शक्तिशाली स्थान कालिंजर के किले की घेराबंदी की।
- परमर्दिदेव ने कुछ समय तक इसका विरोध किया, लेकिन उन्हें कुछ धन और हाथियों सहित किले को समर्पित करना पड़ा। लेकिन संधि की शर्तें पूरी होने से पहले ही परमर्दिदेव की मृत्यु हो गई।
- चंदेल के नए शासक अजयपाल के द्वारा अपने शासन की स्थापना के बावजूद तुर्कों का आक्रमण जारी रहा, लेकिन सूखे के कारण किले के सभी जल स्रोत सूख गए। इस कारण अजयपाल की सेना को बिना शर्त आत्मसमर्पण करना पडा।
- इस तरह लंबे शासनकाल के बाद चंदेल साम्राज्य का पतन हो गया।
- कुतुबुद्दीन ने कालिंजर का किला हसन अर्नाल को सौंप दिया।

मालवा अभियान

- मालवा में **कुतुबुद्दीन ऐबक का** पहला **आक्रमण उज्जैन पर** हुआ था।
- 1196-1197 ई. में **ऐबक ने उज्जैन को लूटा,** लेकिन यह जीत भी स्थायी साबित नहीं हुई।
- 1210 ई. में **कुतुबुद्दीन ऐबक की मृत्यु** के बाद, **आराम शाह** शासक बने, इस दौरान **हिंदुओं ने** अपनी **सत्ता** वापस प्राप्त कर ली थी ।
- 1231 ई. में, **इल्तुतमिश ने ग्वालियर को** घेर लिया, **प्रतिहार शासक मलयबर्मन** ने लगातार लड़ाई लड़ी । इस **लड़ाई** में **11 महीने तक लम्बी घेराबंदी** चली।
- अंत में **प्रतिहार शासक मलयबर्मन** की हार हुई, किले की **महिलाओं ने** तालाब के पास **जौहर** कर लिया। इस तालाब को **जौहर ताल** के नाम से जाना जाता है।

इल्तुतमिश

- **ग्वालियर विजय** के दो वर्ष बाद **मलिक नुसरत उद्दीन तैयती** को ग्वालियर किले का मुखिया बनाया गया।
- इस प्रकार **गुना-चंदेरी का क्षेत्र** इल्तुतमिश के कब्जे में चला गया।
- **इल्तुतमिश ने कालिंजर** जीतने के लिए **बयाना और ग्वालियर के राज्यपाल मलिक तैयती** को सेना के साथ रवाना किया।
- **चंदेल राजा त्रिलोक्यवर्मन** तुर्की सेना का मुकाबला नहीं कर सके और **कालिंजर** को छोड़कर भाग गए।
- 1234 ई. में, इल्तुतमिश ने अपने **मालवा अभियान** के दौरान **भेलसा** पर हमला किया और उसे नष्ट कर दिया।
- भेलसा पर कब्जा करने के बाद, वह **उज्जैन** की ओर चला गया, इस समय **मालवा में देवपाल परमार** शासन कर रहा था।
- **तबकात-ए-नासिरी के लेखक मिन्हाज-उस-सिराज** लिखते हैं कि **इल्तुतमिश ने विक्रमादित्य** की मूर्ति और **महाकाल के शिवलिंग** को **दिल्ली** में लूटा था, जिसकी पुष्टि बाद में **फरिश्ता ने** अपनी पुस्तक में की थी।

Unleash the topper in you